International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

मेघालय प्रदेश के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास सम्बन्धी प्रदत्तों का संक्षिप्त मूल्यांकन

Ms. Ruchi
Scholar
Department of Education
University of Delhi

Dr. Gyanendra Kumar
Supervisor
Department of Education
University of Delhi

सार–

भारत देश के उत्तर पूर्वी भाग में एक पहाडी पटटी है। यह पहाडी पट्टी खुबसूरत प्राकृति संपदा, मनमोहित झरनो, कलकल करती नदियो, खनिज, गांवो और शहरो से सजी है। इस पहाडी पटटी के पूरे क्षेत्रफल को मिलाकर उत्तर पूर्वी भारत का एक खूबसूरत राज्य (मेघालय) बनता है। अपने इस शोध पेपर में हम भारत के इसी खूबसूरत राज्य मेघालय की शिक्षा प्रगति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों हेतु उपादेयता रखता हें विद्यार्थी शिक्षक समय समय पर संस्थानों में आयोजित होने वाली पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (कार्यशाला, प्रस्तुतीकरण, आशुभाषण, वाद–विवाद) में सहभागिता ले कर आत्मविश्वास विकसित कर सकेगें तथा शैक्षिक गतिविधियों के दौरान हास्य की भावना का विकास कर सकेंगें विद्यार्थी–शिक्षक प्रस्तुत शोध परिणामों से अपने शिक्षण में सुधार कर बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकेंगे। प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिभावकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हें अभिभावक घर, परिवार में बच्चों को विभिन्न प्रकार के कार्य स्वयं करने के लिए प्रोत्साहित करेगे, उन्हे स्वस्थ प्रतियोगिता के प्रति प्रोत्साहित करेगें। किसी कार्य को करने में रोक–टोक नहीं करेगें, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास का गुण विकसित होगा तथा घर का वातावरण हास्यपूर्ण बनाये रखेगें जिससे बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा। तनाव मुक्त वातावरण रखने से उनमें व्यक्तित्व परिष्कृत करने का भाव विकसित हो सकेगा।

प्रस्तावना–

प्रत्येक शैक्षणिक संस्था अपने विद्यार्थी को अधिगम अनुभव प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण कार्य करती है और विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करती है। इस परिवर्तन को लाने मे संस्था के महत्वपूर्ण घटक शिक्षक होते हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षक परिषद (1986) द्वारा विद्यालयीन षिक्षकों की अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता के संबंध में कहा गया है ''शिक्षक किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। शिक्षक ही है जो मुख्य रुप से किसी भी स्तर पर शैक्षिक प्रक्रिया के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार है तथा यह दर्शाता है कि शिक्षकों की तैयारी में निवेश करना जरूरी है, ताकि किसी राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित हो।

चित्र संख्या–1 शिक्षक के गुण

शिक्षण एक व्यवसाय है तथा शिक्षकों को शिक्षण व्यवसाय की प्रमुख विशेषताओं जैसे व्यवस्थित सिद्वान्त, एक निश्चित समयावधि में गहन प्रशिक्षण, अधिकार, समुदाय की स्वीकृति नैतिक सहिंता तथा संस्कृति, शोध एवं विशेषज्ञता द्वारा ज्ञान की पुष्टि पर बल देना चाहिए जिससे शिक्षकों के व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके, संप्रेषण कौशल पुष्ट हो सकें शिक्षक के व्यवसायोन्मुखी स्वरुप के अतिरिक्त अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षको में निम्न गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है–

शिक्षा यदि विकास का आधार है तो शिक्षण उसका माध्यम। शिक्षा को सही दिशा शिक्षक के द्वारा ही निर्धारित होती है। यदि शिक्षक उचित एवं सही मार्ग निर्देशन नहीं करता है तो शिक्षा निरुद्देश्य एवं निःसहाय हो जाती है और व्यक्ति शिक्षित होने के बावजूद न तो अपने व्यक्तित्व का और न ही समाज का विकास कर पाता है। इसी कारण उचित शिक्षा के विकास के लिए उचित एवं सही मार्गदर्शक या पथप्रदर्शक का होना अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार व्यक्ति के विकास की दिशा सही पथप्रदर्शक पर निर्भर करती है उसी प्रकार एक राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा शास्त्री और दार्शनिक अरविन्द ने कहा है "शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति बनाता है, शिक्षक देश का भावी कर्णधार व समाज का मार्गदर्शक माना गया है। वह राष्ट्र का शिरोमणि, निर्माता एवं कर्णधार है।"

रोबोट एवं कृत्रिम बुद्वि के इस युग में बालक के महत्व को समझाकर उनके लिए शिक्षा का आयोजन करने वाले शिक्षकों को शिक्षित करने की विशेष आवश्यकता है, ताकि वह समाज के लिए योग्य उपभोक्ता की अपेक्षा उत्पादक नागरिको का निर्माण कर सके। इस दृष्टिकोंण से उत्तम शिक्षकों के निर्माण हेतु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का अत्यधिक महत्व है। शिक्षण एक कला है, साधना है, शिक्षण में दक्षता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न करना पडता है। शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि उत्तम शिक्षण किस प्रकार किया जा सकता है उसे शिक्षण कला में पारंगत होना चाहिए। शिक्षण सूत्रों, सिद्धान्तों और विधियों का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है। साथ ही उसे छात्रों की रूचियों, भिन्नताओं एवं योग्यताओं की जानकारी भी अनिवार्यतः अपेक्षित है।

एक योग्य कुशल व प्रभावी शिक्षक बनने हेतु प्रवेशार्थी जो प्रशिक्षण प्राप्त करता है उसे अध्यापक शिक्षा कहते है। **जे. एस. राजपूत** के शब्दों में – "अध्यापक शिक्षा ही वह प्रवेश मार्ग है जो किसी अभ्यार्थी के

शिक्षक व्यवस्था में प्रवेशार्थ नवद्वार को उद्घाटित करने हेतु उसे इस योग्य बनाती है कि वह राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सकें।

यह ज्ञातव्य है कि विद्यार्थी की उपलब्धि की गुणवत्ता और सीमा मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमता, संवेदनशीलता और शिक्षक प्रेरणा द्वारा निर्धारित की जाती है। अध्यापक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो शिक्षक दक्षताओं के विकास से संबंधित है जो कि शिक्षक को व्यवसाय की आवश्यकताओं को पूरा करने और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम और सशक्त बनाता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम एक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम है तथा इसका क्षेत्र अधिक व्यावहारिक तथा अन्तर्विषयक प्रकृति का है इसके ज्ञान की प्रकृ ति आधारभूत नहीं वरन् क्षेत्र आधारित है। अतः इसके व्यावसायिकों में अपने कार्य क्षेत्र सम्बन्धी घटकों और प्रक्रियाओं की सैद्धान्तिक समझ उसके व्यावहारिक प्रयोग एवं दोनों में समन्वय की आवश्यकता होती है।

हमारे देश में शिक्षकों की नियुक्ति (चाहे विद्यालय स्तर की हो या महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तरीय) उनकी अकादमिक डिग्री, डिप्लोमा एवं सेवा पूर्व प्रशिक्षण के आधार पर की जाती है। साथ ही सेवारत शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता हैं यद्यपि उन्हें निर्धारित समय पर ग्रेड एवं स्केल भी प्राप्त होते हैं। किन्तु फिर भी इनमें से अधिकांश अपने कार्य में उद्देश्यहीन और हताश होते जाते है व अधिक समय तक प्रसन्न नहीं रहते हैं कुछ अपने व्यवसाय के प्रति कम समर्पित होते है और इस बात से सन्तुष्ट होते है कि वे स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधि से जो अधिगम प्राप्त करके आते है वही पर्याप्त है जबकि उन्हें इस बात से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए कि अधिगम एक सतत् प्रक्रिया है। अनेक शिक्षक ऐसे भी होते है जो शिक्षण को अस्थायी व्यवसाय या सर्वोत्तम कैरियर का प्रतीक्षालय मात्र मानते है। कतिपय शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय हेतु कितना निष्ठ, प्रतिबद्ध तथा समर्पित है? यह पूर्णतः व्यक्तिगत संदर्भ है। यह उसकी स्वयं की क्षमता एवं सामाजिक परिस्थिति पर तो निर्भर करता है साथ ही इसके प्रशिक्षण से भी प्रभावित होता है।

मेघालय का अर्थ

भारत देश के उत्तर पूर्वी भाग में एक पहाडी पटटी है। यह पहाडी पट्टी पूर्व से पश्चिम तक लगभग 300 किलोमीटर लंबी और लगभग 100 किलोमीटर चौडी है। इस पहाडी पटटी का कुल क्षेत्रफल 22429 वर्ग किलोमीटर है। यह पहाडी पट्टी खुबसूरत प्राकृति संपदा, मनमोहित झरनो, कलकल करती नदियो, खनिज, गांवो और शहरो से सजी है। इस पहाडी पटटी के पूरे क्षेत्रफल को मिलाकर उत्तर पूर्वी भारत का एक खूबसूरत राज्य (मेघालय) बनता है। अपने इस शोध पेपर में हम भारत के इसी खूबसूरत राज्य मेघालय की शिक्षा प्रगति का अध्ययन किया है और इस राज्य की इन प्रमुख जानकारियो के बारे में अपने शोध में वर्णित किया है।

जितना खूबसुरत यह राज्य है, उतना ही खूबसूरत इस राज्य का नाम है। मेघालय संस्कृत भाषा के दो शब्दो को मिलाकर बना है। मेघ़आलय=मेघालय। संस्कृत भाषा के इन दोनो शब्दो का अर्थ निकाला जाये तो "मेघ" का अर्थ होता है "बादल"। और "आलय" का अर्थ होता है "निवास" यानि "घर"। तो इस तरह मेघालय का अर्थ होता है "बादलो का निवास" या फिर "बादलो का घर" भी कहा जा सकता है।

मेघालय का इतिहास

मेघालय का इतिहास यहा निवास करने वाली तीन प्रमुख जनजातियो खासी, जयंतिया, और गारो से जुडा है। ये जनजातिया यहा सदियो पहले से निवास करती आयी है। किदवंतियो के अनुसार खासी राज्य के सबसे शुरूआती आप्रवासीयो में से थे। खासी, जयंती, गारो इन जनजातियो का अपना अपना क्षेत्र था। सन्

1765 के आस पास असम के इस क्षेत्र पर अंग्रेजो का अधिकार हुआ था। आजादी के बाद सन् 1954 में इस क्षेत्र के निवासियो ने एक अलग पृथक राज्य की मांग उठाई जिसे राज्य पुनर्गठन आयोग ने अस्वीकृत कर दिया था। सन् 1960 में इस मांग को शांतिपूर्ण तरीको से मनवाने के उद्देश्य से "आल पार्टी हिल लीडर्स" का गठन किया गया। इन आंदोलनो के चलते सितंबर 1968 में भारत सरकार ने मेघालय को असम राज्य के अंदर रहते हुए स्वायतशासी राज्य का दर्जा दे दिया। बाद में 21 जनवरी 1972 को एक अलग राज्य के रूप में मेघालय की स्थापना हो गई।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य की सफलता उसके उद्देश्य के चयन एवं उद्देश्य के क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। उद्देश्य शोध की क्रियाओं को निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। संप्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि एंव संबद्व अनुसंधान अध्ययनों के विश्लेषण एवं विवेचना के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य अग्रांकित प्रकार से निर्धारित किये गये हैं

- मेघालय प्रदेश के प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर का अध्ययन करना।
- मेघालय प्रदेश के प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का निम्न संदर्भों में अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना–

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में विविधता पाई जाती है।

शोध क्रियान्वयन–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रथम उद्देश्य के लिए मेघालय प्रदेश के कुल 696 न्यादर्श को पूर्ण मानकर संकलित प्रदत्तों का उपयुक्त विश्लेषण विधि द्वारा विश्लेषण किया गया तथा निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

शोध आंकलन–

प्रस्तुत शोध पेपर में अनुसंधान आकल्पन एवं क्रियान्वयन को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया हैं। शोध कार्य में प्रदत्तों को प्रायः उनकी सामान्य विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता हैं। प्रस्तुत शोध में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का अध्ययन किया गया हैं। आत्मविश्वास से संबंधित प्राप्त प्रदत्त को एक साथ व्यवस्थित कर वर्गीकृत किया गया हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना–1 प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में विविधता पाई जाती है।

तालिका संख्या–1

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में विविधता

आत्मविश्वास के स्तर	विद्यार्थियों की संख्या (696)	विद्यार्थियों का प्रतिशत
उच्च	208	29.9 प्रतिशत
औसत	272	39.1 प्रतिशत
निम्न	216	31.0 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर के अन्तर्गत उच्चतम आत्मविश्वास स्तर पर (29.9 प्रतिशत) विद्यार्थी, औसत स्तर पर (39.9 प्रतिशत) विद्यार्थी एवं निम्नतम स्तर पर (31 प्रतिशत) विद्यार्थी हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उच्चतम एवं निम्नतम स्तर पर विद्यार्थियो का प्रतिशत कम ((29.9 प्रतिशत एवं 31.0 प्रतिशत) है तथा औसत स्तर पर विद्यार्थियों का प्रतिशत सर्वाधिक है।

अतः परिकल्पना–1 **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में विविधता पाई जाती है** को स्वीकृत किया जाता है।

आत्मविश्वास स्तर में विविधता पाई जाने का कारण विद्यार्थियों का वातावरण या परिस्थितियां हो सकती है। निम्न स्तर का आत्मविश्वास रखने वाले विद्यार्थियों का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र का होना भी है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों को कम स्वतंत्रता, अपने विचार प्रस्तुत करने का, स्वयं अपना कार्य करने का अवसर कम मिल पाता है। जो अवसर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों व घरों में शिक्षकों तथा अभिभावकों द्वारा दिये जाते है उनकी कमी ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों में देखी जाती है। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में आत्मविश्वास में विविधता देखी गयी क्योंकि वर्तमान में अधिकतर विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पढ़ते हैं। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी उनके समक्ष अपने विचार रखने में झिझकते हैं, संकोच करते हैं जिससे उनके आत्मविश्वास स्तर में कमी देखी जाती है।

परिकल्पना–2 प्रारंभिक अध्यापक षिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विभिन्न कारकों के संदर्भ में आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

गौण परिकल्पना प्रारंभिक अध्यापक षिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में लिंगवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–2

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में लिंगवार अन्तर का सार्थकता स्तर

क.सं.	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	छात्र	313	30.36	6.938	0.471	स्वीकृत .05 स्तर पर
2.	छात्राएं	383	30.10	7.712		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–2 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर छात्र समूह का प्राप्त मध्यमान 30.36 तथा मानक विचलन 6.938 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर छात्रा समूह का प्राप्त मध्यमान 30.10 तथा मानक विचलन 7.712 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 0.471 है। जो कि 694 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर टी सारणी के मान 1.96 से कम हैं।

अतः परिकल्पना–2 **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में लिंगवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।** स्वीकृत की जाती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिला एवं पुरूष दोनों ही वर्गों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाते हैं तथा अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं को पुरूष वर्ग के समान ही कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है जिससे उनमें पूर्णतः आत्मविश्वास विकसित होता है और इन्हीं कारणों से विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में लिंगवार सार्थक

अन्तर नहीं पाया गया।

गौण परिकल्पना प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में क्षेत्रवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–3

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में क्षेत्रवार अन्तर का सार्थकता स्तर

क.सं.	क्षेत्रवार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	ग्रामीण	418	29.15	7.490	**4.735**	अस्वीकृत 05 स्तर पर
2.	शहरी	278	31.81	6.895		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–3 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर ग्रामीण विद्यार्थियो का प्राप्त मध्यमान 29.15 तथा मानक विचलन 7.490 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर शहरी विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 31.81 तथा मानक विचलन 6.895 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 4.735 है। जो कि 694 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर टी सारणी के मान 1.96 से ज्यादा हैं।

अतः गौण परिकल्पना **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में क्षेत्रवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है,** अस्वीकृत की जाती है।

इसका मुख्य कारण शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को मिलने वाली परिस्थितियाँ व अवसर हो सकते है। ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में तकनीकों का अभाव, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को अपने विचार दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने के अवसर न दे पाना, नवीन तकनीकी शिक्षण का अभाव, विद्यालय में सह–शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन की कमी आदि अन्य कई कारण हो सकते है जिससे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में क्षेत्रवार अन्तर पाया जाता है।

गौण परिकल्पना में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में विषयवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में विषयवार अन्तर का सार्थकता स्तर

क.सं.	विषयवार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	कला	376	29.11	7.650	**4.338**	अस्वीकृत 05 स्तर पर
2.	विज्ञान	320	31.51	6.813		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–4 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर कला वर्ग का प्राप्त मध्यमान 29.11 तथा मानक विचलन 7.650 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर विज्ञान वर्ग का प्राप्त मध्यमान 31.51 तथा मानक विचलन 6. 813 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 4.338 है। जो कि 694 स्वतंत्रता के अंश पर .05

सार्थकता स्तर पर टी सारणी के मान 1.96 से ज्यादा हैं।

अतः परिकल्पना–3 **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में विषयवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है,** अस्वीकृत की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास कला वर्ग के विद्यार्थियों से उच्च होता है इसका कारण को सकता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी अपनी शैक्षिक गतिविधियों को क्रियात्मक रूप से पढ़ते है,वह प्रयोग करते हैं, उनके परिणामों की जांच करते हैं। आपस में अन्तःक्रिया ज्यादा करते हैं। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में कला वर्ग के विद्यार्थी सैद्धान्तिक ज्ञान ज्यादा प्राप्त करते हैं जिनमें दूसरे विद्यार्थियों से अन्तः क्रिया कम होती है, वह स्व अध्ययन अधिक करते हैं जिससे उनके आत्मविश्वास में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में कमी देखी गयी है।

गौण परिकल्पना में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अनुदेषन माध्यमवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–5

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में अनुदेषन माध्यमवार अन्तर का सार्थकता स्तर

क.सं.	अनुदेषन माध्यम	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	हिन्दी	401	29.44	7.716	3.264	अस्वीकृत 05 स्तर पर
2.	अंग्रेजी	295	31.27	6.742		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–5 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 29.44 तथा मानक विचलन 7.716 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 31.27 तथा मानक विचलन 6.742 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 3.264 है। जो कि 694 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर टी सारणी के मान 1.96 से ज्यादा हैं।

अतः परिकल्पना–4 **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अनुदेषन माध्यमवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है,** अस्वीकृत की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि हिन्दी अनुदेशन माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उच्च स्तरीय पाया गया इसका कारण विद्यार्थियों को मिलने वाले शैक्षणिक अनुभव हो सकते हैं क्योंकि हिन्दी माध्यम के अत्यधिक विद्यालय राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत आते हैं उनका पाठ्यक्रम, सह–शैक्षणिक गतिविधियां अंग्रेजी माध्यम विद्यालय जो कि सी0बी0एस0सी0 के अधीन आते हैं उनकी गतिविधियों से भिन्न होती है। सी0बी0एस0सी0 पाठ्यक्रम में बच्चों के क्रियात्मक पक्षों पर अधिक बल दिया जाता है, उन्हें विद्यालय में पोर्टफोलियों वर्कशॉप, स्टेज परफोर्मेंस आदि गतिविधियां करवायी जाती है जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, इन गतिविधियों का अभाव हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में दिखाई देता है जिससे उनका आत्मविश्वास अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में निम्नस्तरीय पाया गया।

गौण परिकल्पना में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में पूर्व

षैक्षिक योग्यतावार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–6

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में पूर्व षैक्षिक योग्यतावार अन्तर का सार्थकता स्तर

क्र. सं.	पूर्व षैक्षिक योग्यता	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	12 वीं	431	35.11	5.604	4.277	अस्वीकृत 05 स्तर पर
2.	बी.ए./एम.ए.	265	37.46	5.480		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–6 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर 12 वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 35.11 तथा मानक विचलन 5.604 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर बी.ए./एम.ए. उत्तीर्ण विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 37.46 तथा मानक विचलन 5.480 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 4.277 है। जो कि 694 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर टी सारणी के मान 1.96 से ज्यादा हैं।

अतः परिकल्पना–5 **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में पूर्व षैक्षिक योग्यतावार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है,** अस्वीकृत की जाती है।

12वीं उतीर्ण विद्यार्थियों की तुलना में बी.ए./एम.ए. उत्तीर्ण विद्यार्थी अत्यधिक अनुभवी प्रशिक्षित तथा उम्र में बढ़े होते हैं। 12वीं तक विद्यार्थी घर और विद्यालय की सीमा में बंधे होते हैं जब वह महाविद्यालय में पढ़ाई करते हैं तो उन्हें अकेले आना जाना, पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य कई कार्य एवं अन्तः क्रिया करने की स्वतंत्रता होती है, परिवार द्वारा भी उन्हें अतिरिक्त कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाने लगती है जिससे उनका आत्मविश्वास में बढ़ोतरी देखी जा सकती है और दोनों वर्गों के आत्मविश्वास स्तर में अन्तर पाया जाता है।

गौण परिकल्पना में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सत्रवार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–7

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्यमान में सत्रवार अन्तर का सार्थकता स्तर

क्र. सं.	सत्रवार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी –मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
1.	प्रथमवर्ष	320	28.66	8.121	5.236	अस्वीकृत 05 स्तर पर
2.	द्वितीय वर्ष	376	31.54	6.382		

694 स्वतंत्रता के अंश पर टी का .05 स्तर पर सारणी मान = 1.96

तालिका संख्या–7 के अनुसार प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर प्रथमवर्ष का प्राप्त मध्यमान 28.66 व मानक विचलन 8.121 तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर द्वितीयवर्ष का प्राप्त मध्यमान 31.54 व मानकविचलन 6.382 है। दोनो मध्यमानो के अन्तर का प्राप्त टी. मान 5.236 है। जो स्वतंत्रता के अंश 694 पर 0.05 पर सार्थक टी–मान 1.96 से अधिक हैं।

अतः परिकल्पना में **प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सत्रवार**

सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

प्रथम वर्ष में जब विद्यार्थी प्रवेश लेता है तो उनके पास अनुभव कम होते हैं क्योंकि वह 12वीं पास होते हैं। प्रथम वर्ष में विद्यार्थियों को कई शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियां करवायी जाती है जैसे सूक्ष्मशिक्षण, कार्यशाला, प्रस्तुतिकरण, सेमिनार आदि तथा द्वितीय वर्ष में शिक्षण कार्य करवाया जाता है, जिससे प्रथम वर्ष की तुलना में विद्यार्थी अधिक प्रशिक्षित व अनुभवी हो जाते हैं जिससे उनमें प्रथम वर्ष के विद्यार्थी की तुलना में आत्मविश्वास उच्च स्तरीय देखा जाता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रशासक वर्ग को विद्यार्थी–शिक्षकों हेतु आवश्यक संसाधन कोशलों के विकास की ओर प्रेरित करता हें विशेषतः आत्म–विश्वास। प्रशासकों द्वारा विद्यार्थी शिक्षकों के लिए कई गतिविधियाँ आयोजित करवाई जाए जिससे उनमें आत्मविश्वास विकसित हो सके। महाविद्यालयों का वातावरण हास्यपूर्ण रखा जाए जिससे विद्यार्थी–शिक्षक तनाव मुक्त रह, सर्वागींण विकास कर सके तथा उनमें एक कुशल शिक्षक में निहित गुणों का विकास हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- दुबे, अर्चना (2001) ''विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास व तर्क योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी, 2001, पृष्ठ संख्या 34–37
- ए. मारूफ (2002) ''पुरूष और महिला छात्रों के बीच ग्रामीण और शहरी अनुसूचित जन–जाति और पिछड़ी जाति की आकांक्षा स्तर और आधुनिकीकरण के प्रति आत्मविश्वास, समायोजन, अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन'' यूरोपियन जर्नल ऑफ एजूकेशन स्टडीज, वाल्यूम–3
- गोस्वामी, वन्दना (2008) सहभागितापूर्ण अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम की क्षेत्र तथा स्वविकास में प्रासंगिकता, शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ
- जाखड, अजीत सिंह (2005) खिलाडी एवं गैर खिलाडी छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास, नेतृत्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पी.एच.डी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
- कनौजिया अमर प्रताप (2007), श्माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं के आत्मविष्वास का तुलनात्मक अध्ययन इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेषन, वॉल्यूम 38, नं 2, 2007
- खत्री शकुन्तला (2003) कार्यशील एवं अकार्यशील महिलाओं के बालको में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भर एवं भग्नाषा का अध्ययन, पी.एच.डी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
- सिन्हा दुर्गानन्द (2007) ''ग्रामीण एवं नगरीय छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' पी. एच.डी. राज. विश्व., जयपुर
- उपाध्याय हिमानी एवं भल्ला डिम्पल (2007) शारीरिक रूप से अक्षम लोगो में आत्मविश्वास, निराशा और वंचितता में शिक्षा की भूमिका, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, वॉल्यूम 27, नं 2, 2006
- उर्फ और हाजीर (2009) ''डिटरमाइन द रिलेशनशिप बिटवीन टाइप ऑफ कॉन्फिडेन्स इन्ड्यूसिंग स्टिमुलस, एकेडमिक सेल्फ कॉन्फिडेन्स एण्ड कॉग्निटीव परफोर्मेन्स अमन्ग इन्जीनियरिंग स्टूडेन्ट्स''

- वानखेडें और रोकडें (2011) ''अमरावती के विभिन्न स्कूलों के 8 वीं कक्षा में पढ़ने वाले ग्रामीण और शहरी छात्रों के आत्मविश्वास पर एक तुलनात्मक अध्ययन'' इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, वॉल्यूम 39, नं 2, 2011